**कमालुद्दीन –**

(खाँसते हुए, कहते हैं)

खों..खों अरी मेरी नूर महल। कहीं तुमने, भंग तो न चढ़ा डाली? (खाँसते हैं) खों..खों तेरा मायका खाँडा-फलसा में है, वहाँ चल रहा है मेला बड़ी गवर का। भंग मिला हुआ प्रसाद ठोक गयी होगी तू, आख़िर तुझे है बुरा शौक़ मीठा खाने का।

**नूरिया -**

(ऊँघ में, बोलता है)

अम्मी ठहरी, चटोखरी। चटोखरी..चटोखरी चटोखरी। मुफ़्त का माल खाने में, है बड़ी उस्ताद।

**हमीदा बी –**

(ग़ुस्से में, कहती है)

अब तुम दोनों बाप-बेटे के पर निकलने लगे हैं। अभी कान पकड़कर बैठाकर आती हूँ, इन ख़बती एम.एस टी. वालों के पास। वहाँ बैठे-बैठे अब्दुल अज़ीज़ के नेक दख्तर रशीदिये

का पाद सूँघते रहना। ख़ुदा जाने, क्या-क्या खाकर आ जाता है, इस गाड़ी में?

(दोनों को पकड़कर बैठाकर आ जाती है, पास वाले केबीन में। जहाँ रशीद भाई, अपने दोस्तों के साथ गुफ़्तुगू में मशग़ूल है।)



**रशीद भाई –**

(कमालुद्दीन को देखते हुए, कहते हैं)

वाह बड़े मियाँ, सैर-ओ-तफ़रीह में जा रहे हैं, चाची के साथ?

**कमालुद्दीन –**

(ग़ुस्से में, कहते हैं)

तुम और तेरी चाची, जाओ भंगार में। तुमको रहती है कब्ज़ी की शिकायत, और तेरी चाची को शिकायत है मीठा खाने की। मीठा खाती है, मगर बोलती है कड़वे नीम के पत्तों की तरह। ख़ुदा जाने, वह कहाँ से आ जाती है नीम की पत्तियाँ

चाबकर..? और तुम मियाँ, न जाने क्या ठूँसकर आ जाते हो अपने पेट में?

**रशीद भाई –**

(हँसते हुए, कहते हैं)

चाचा आख़िर बात क्या है, क्यों चाची पर ग़ुस्सा करते जा रहे हैं आप? और मैंने तो किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा, फिर मुझ पर काहे बरस रहे हैं आप? अगर दिल में कोई बात छुपाकर रखी है आपने, तो कह दीजिएगा... न तो आपको भी कब्ज़ी हो जायेगी, मेरी तरह।

**कमालुद्दीन –**

लीजिये सुनिए, साहेब ज़ादे। तुम्हारी चाची को...

(कमालुद्दीन बताते हैं, किस तरह उनको उस केबीन से हटाकर यहाँ लाकर बैठाया गया? सुनकर, सभी हँसते हैं।)

**कमालुद्दीन –**

मगर म्यां, यहाँ तो हमारी बीबी ठहरी नीम की तरह बाड़ी बोलने वाली...और यह हमारा नेक दख्तर ठहरा नीमबाज़। जब देखो तब यह पड़ा रहता है, ऊँघ में।

**ठोक सिंहजी –**

भाग्यशाली इंसानों को मिलती है, अच्छी औलादें। किसी ज़माने में भोला विनायक विनयशील और सुशील बच्चा...

**रशीद भाई –**

अब आप क़िस्सा ही बयान कर लीजियेगा, हम अपने-आप समझ जायेंगे कि बच्चों का पालन किस तरह करना चाहिए? जिससे अपनी औलादों में, विनायक के गुण मौजूद हों।

**कमालुद्दीन –**

कहो भाई, कहो। हम भी सुनेंगे और समझ जायेंगे कि बच्चों के पालन-पोषण में कमी कहाँ रह गयी?

**कमला –**

ठाकुर साहेब ने आज हमारा कितना उपकार कर दिया है अब यदि शीघ्र ही अपने क्रम के अनुसार यहाँ आते हैं तो ठाकुर साहेब यही समझेंगे कि, आप बड़े लालची हैं। एक बार इतना ले गये देर नहीं हुई फिर आकर मौजूद हो गए?

**परमानंद –**

इसलिए इस बार मैंने सोच लिया था कि गढ़ी से कोई बुलावा नहीं आता, तब-तक हम वहाँ नहीं जायेंगे। मगर क्या करूँ, भागवान? बार-बार दिमाग़ में एक ही ख़्याल आता है, अगर वहाँ जाते हैं, तो वहाँ से कुछ लेकर आयेंगे... मगर, यह अच्छा नहीं है। यही कारण है, मैंने इस बार ठान ली, इस बार बिना बुलावे हम वहाँ नहीं जायेंगे। मगर क्या करूँ, इसी बैशाख में विनायक का यज्ञोपवीत संस्कार था...

**कमला –**

जी हाँ, यह काम ठाकुर साहेब की मदद के बिना पूरा नहीं हो सकता। यह अच्छा हुआ भगवान ने हमारी सुन ली, ठाकुर साहेब को हमारी याद आयी उन्होंने हरकारा भेजकर इतने दिन तक नहीं आने का उलाहना देते हुए कहलाया कि

'कल परमानंद सस्त्रीक इस गढ़ी में अवश्य आवें।' यह संदेशा देकर, हरकारा लौट गया। इस तरह आपका मान भी रह गया, और काम का काम भी चल निकला।

**परमानन्द –**

विनायक। सूर्योदय हुवा चाहता है झट स्नान कर सूरज को अर्घ्य दे दे और देख, संध्या आदि नित्य कर्म में त्रुटि न होने पावे। बेटा, नित्य कर्म में जितनी गायत्री जपते थे उतनी आज भी अवश्य जपना। जैसे हमने बतलाया है पूरक, कुम्भक, रेचक युक्त तीनों प्राणायाम सविधि करना, भोजन करते समय मौन रहना...

**विनायक –**

पिताजी, तब भिक्षा नहीं लानी क्या?

**परमानन्द –**

लानी है, विनायक। आज भिक्षा का जो अन्न लाना उसे रख छोड़ना, बिना हमारी आज्ञा उसे खर्च मत कर

डालना। हमारे साँझ के होम के लिए टटके कुशा और लकड़ी वन से तोड़ लाना। और बेटा, देखो। जो कोई अतिथि आ जाय तो उसका सत्कार विधिपूर्वक करना। तुम अभी लड़के हो इससे ऐसा न हो कि किसी बात में चूक जाओ। तो जो पाहुने आवें उनका स्वागत सत्कार भरपूर न बन पड़े, इस बात की अधिक चौकसी रखना।

**ठोक सिंहजी –**

आपने बजा फ़रमाया, रशीद भाई। क्रोध के समय बालकों की भृकुटी के आगे दुर्वासा की भृकुटी भी मात है। यह माता का स्नेह नहीं वरन उन भृकुटियों ही का प्रताप था जो विनायक को अपनी मनमानी करा ही के छोड़ता था और माँ को भी उसी के मन की करना ही पड़ता था। माँ जो संसार में वात्सल्य-रस की सजीव मूर्ति होती है उसके साथ विनायक को अपनी भृकुटी काम में लाने का अवसर भी नहीं मिलता था पर पिता के कड़े बर्ताव के कारण बेचारा विनायक क्रोध और दु:ख में जब भर जाता था..

**कमालुद्दीन –**

यह कमबख़्त तो बड़ा ज़िद्दी निकला, ऐसी ज़िद मेरा बच्चा कर लेता था तो मैं उसे पीट-पीटकर सीधा कर दिया करता। उस विनायक की माँ ने अपने सर पर चढ़ा रखा था, इस नामुराद विनायक को?

(तभी पाख़ाना जाने लिए उठी चच्ची हमीदा बी कुछ अलग सुन लेती है, उधर से गुज़रते वक़्त वह इस केबीन में बैठे कमालुद्दीन को बिफर कर कहती है।)

**हमीदा बी –**

अभी तक ग़ुस्सा ठंडा हुआ नहीं तुम्हारा, जानते हो मैं कितनी भारी पड़ती हूँ? बोलो, मैंने कब अपने नेक दख्तर को सर पर बैठाया? यह तुमने चढ़ाया है इसे अपने सर पर, जो रात बीते देखता रहता है भूतों की फिल्म और फिर दिन-भर ऊँघ में पड़ा रहता है नामाकूल।

(तभी ऊँघ में पड़ा नूरिया, नींद में ही बोल उठता है।)

**नूरिया –**

(ऊँघ में बोलता है) –

फिर मज़ा ही मज़ा, खूब खाओ रसगुल्ला...

**हमीदा बी –**

(चिढ़ कर, कह उठती है) –

नामुराद! क्या कह रहा है, कमबख़्त? कमाता-धमाता कुछ नहीं, ऊपर से कह रहा है रसगुल्ला खाऊँ? तेरे बाप की पेंशन से चल रहा है घर, तू पड़ा-पड़ा ऊँघ लेता रह। अब तू अपनी खोपड़ी पर खायेगा, मेरी जूत्ती का प्रसाद.. तब तेरी ऊँघ मिटेगी, नालायक़।

(ग़ुस्से में हमीदा बी पाँव की जूत्ती निकालकर, झट उसके सर पर वार करती है। खोपड़े पर मार क्या खाई, उसने? वास्तव में वह तो देख रहा था, सपना। और सपने में उसके सामने खंज़र लिए खड़ी है, भूतनी। मार खाते ही, उसे ऐसा लगा मानो उस भूतनी ने खंज़र उसके सीने में उतार डाला है? डर के मारे वह चीख उठता है, और चिल्लाकर कहता है।)

**नूरिया –**

(चीखता हुआ, कहता है) –

मार डाला, इस भूतनी ने।

(सुनकर, ग़ुस्सेल हमीदा बी एक बार और जूत्ती से पीटती है.. तब कहीं जाकर नूरिये की आँख खुलती है। वह आँखें मसलकर उठता है, और डरता हुआ हमीदा बी से कहता है।)

**नूरिया –**

(आँखें मसलता हुआ, कहता है) –

अरे अम्मीजान, आप? कहिये क्या हुक्म है? क्या आपके साथ चलूँ?

**हमीदा बी –**

(जूत्ती को पाँव में डालती हुई, कहती हैं) –

कमबख़्त, मेरे साथ पाख़ाना चलेगा क्या? वहाँ बाहर बैठकर, पत्थर बजाते रहना।

**नूरिया –**

जो हुक्म, अम्मी। अभी चलता हूँ।

**हमीदा बी –**

(ग़ुस्से से) –

जा बैठ जा, अपनी दुल्हन के पास पल्लू में बँधकर। बड़ा आया नासपीटा, पाख़ाना जाएगा मेरे साथ..?



**कमालुद्दीन –**

बाप क्यों करेगा, उस नालायक की ज़िद पूरी? बेटे को बिगाड़ना नहीं है। देख लीजिये, इस नूरिये के हाल। कमबख़्त को माँ ने बिगाड़ डाला, अब यह मेरे वश में नहीं रहा।

**ठोक सिंहजी –**

मारने-पीटने से कुछ होने वाला नहीं। चाचा बाप की आँख से डरते हैं, बच्चे। आप आँख काम में लिया करें।

(तभी हमीदा बी पाख़ाने से लौट आती है, और वह ठोक सिंहजी की कही बात सुन लेती है।)

**हमीदा बी –**

(केबीन में आकर, कहती है) –

अरे मर्दूद। अब तू मेरे खाविंद को इस वृद्धावस्था में आँख चलाना सिखाएगा? घर में बहू-बेटियाँ बैठी है, और तू इनसे ऐसी वाहियात हरक़त कराएगा? (कमालुद्दीन की बाँह पकड़कर, कहती है) नूरिये के अब्बा अब चलो, अपने केबीन में। यह नामुन्छ्या मुंडा तुमको बिगाड़ डालेगा कमबख़्त।

**ठोक सिंहजी –**

रुकिए चाची, बात यह नहीं है। मैं तो यह कह रहा था...

**हमीदा बी –**

अरे मर्दूद। तूने बदबू फैला दी कमबख़्त, इस पूरे डब्बे में। (ऊँघ ले रहे नूरिये से, कहती है) अरे नूरिये अब ऊँघ मत ले, उठ जा कमबख़्त। अब जाकर पकड़कर ला, इस अब्दुल अज़ीज़ के छोरे को। मर्दूद, कब से छोड़ रहा है तोप?

(ऊँघ में पड़े नूरिये को पूरा साफ़ सुनाई नहीं देता, वह तो बैठा-बैठा ख़्वाब देख रहा है, जिसमें बरगद के पेड़ से एक नाग नीचे छलांग लगा रहा है। फिर क्या? वह ख़्वाब में उस

नाग से बचने के लिए हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लेता है। मगर वास्तव में वह अपने पास बैठे अब्बा कमालुद्दीन के पायजामे का नाड़ा पकड़कर, उसे खींच लेता है। और, ऊँघ में ही वह चीखता हुआ कहता है।)

**नूरिया –**

(नाड़ा खींचता हुआ, चीखता है) –

पकड़ लिया, पकड़ लिया। साँप को पकड़ लिया।

**कमालुद्दीन –**

(नूरिये के सर पर ठोल जमाते हुए, कहते है) –

कमबख्त साँप नहीं है, यह। तेरे बाप का नाड़ा है..अब तू इसे खोलकर, अपने बाप को सरे आम नंगा करेगा क्या? छोड़, मेरा नाड़ा।

**सरदार –**

क्यों रे। तू क्यों घर पर रह गया है?

**विनायक –**

महाराज। पिताजी हमारे ठाकुर साहेब के यहाँ गए हैं।

**सरदार –**

हाँ, हाँ, सो तो हम जानते ही हैं। अभी राह में उनसे भेंट हुई थी।

**विनायक –**

हाँ, तो फिर घर चलिए ना।

(अब विनायक को कुछ संदेह न रहा, वह समझने लगा कि ये लोग उसके बाप के कोई जान-पहचान के या दोस्त हैं और वह द्वार से हट गया जिससे ये लोग भीतर जा सके। इस बात से इन तीनों की हिम्मत बढ़ी और भेद लेने के ढंग पर यों पूछने लगे।)

**सरदार –**

तो यह बताओ। तुम्हारे पिता कहाँ चले गए हैं, और तुमको अकेला क्यों छोड़ गए?

(यह सुनकर विनायक कुछ चौकन्ना-सा हो गया क्योंकि अभी ही उन लोगों ने कहा था कि हम लोगों से तुम्हारे

पिताजी से बात हो चुकी है तो फिर हमसे फिर इस तरह क्यों पूछते हैं? फिर भी, विनायक कह देता है।)

**विनायक –**

जी हाँ। ठाकुर साहेब के यहाँ गए हैं।

**सरदार –**

हाँ। ठाकुर साहेब के यहाँ क्यों गए हैं?

**विनायक –**

उन्होंने बुलाया था। कल हमारे यज्ञोपवीत के समावार्त्तन का दिन है।

**सरदार –**

देखो भाई, इस विनायक की चितवन और बोल-चाल में एक ऐसी अनोखी मिठास भरी हुई है जिसने मेरे मन को वश में कर लिया है।

**पहला साथी –**

हुज़ूर, आप यह क्या कह रहे हैं? हम डाकू हैं, किसी के साथ प्रेम-स्नेह नहीं रखा करते।

**दूसरा साथी –**

(सभी ओर आँखें फाड़कर, देखता हुआ) –

हुज़ूर, कुछ न कुछ तो लूटेंगे ही, आख़िर हम हैं दस्यु। हम किसी से सम्बन्ध जोड़ने नहीं आये हैं, यहाँ।

**सरदार –**

देख भाई, आख़िर हम लोग भी इंसान हैं। इस बच्चे पर रहम रखना, हमारा फ़र्ज़ है। अब हम अपने हथियार यहीं रख देते हैं, क्योंकि यह बेचारा अकेला बालक है जो हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

**विनायक –**

अरे महाराज, आप तीनों तो आपस में बहस करने लगे? मैं कह रहा था कि, आपने उस चबूतरे पर काठ की पेटी देखी होगी? उसमें कई ग्रन्थ और मेरे पिताजी के हाथ की

लिखी गयी टीका की पुस्तकें हैं। क्या आपको, पेटी खोलकर दिखालाऊँ? आपको मालूम होगा, कई गुरुकुल ऐसे हैं जहाँ मेरे पिताजी की लिखी हुई पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं।

**सरदार –**

(उसे दुआ देता हुआ, कहता है) –

बेटा, तू भाग्यशाली है, जो तू ऐसे ज्ञानी पुरुष का पुत्र है। ईश्वर करे, तू भी पिताजी की तरह ज्ञानवान बनें। अब तू इन उज्जड़ आदमियों के सामने ज्ञान की बात मत कर। आगे चल, और दिखला, तेरे पिताजी ने क्या-क्या सामग्री लाकर रखी है?

(सरदार के साथी अपने साथ किये जा रहे अपमान को बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं। मगर सरदार के रोब के कारण वे मन-मसोसकर एक दूसरे का मुँह देखने लगते हैं। इधर विनायक को याद आने लगा, जाते समय वह अपनी माँ से इस भण्डार गृह के ताले की चाबी लेना भूल गया। अब उसे फ़िक्र होने लगी कि, अब वह इस कोठरी को कैसे खोलकर इकट्ठी की गयी सामग्री इनको दिखला पायेगा?)

कोठरी में आने के बाद उन तीनों को वहाँ की चीज़ें दिखलाने के बदले वह आप कुछ देखने सा लगता है और बड़े चाव से विनायक ने सरदार को केवल दो चीज़ें दिखलाता है और जब सरदार ने और-और चीज़ों के सामने उसकी बतायी हुई चीज़ों पर आँख भी उठाकर नहीं देखता है वरन सुनी बात अनासुनी-सा कर देता है तब तो विनायक का जी कुछ छोटा हो जाता है और-और उन दोनों चीज़ों को स्वयं उठाकर बड़े प्यार से देखने लगता है। वे कोई भारी चीज़ नज़र नहीं आ रही है, वे तो केवल मिट्टी के खिलौने हैं। उनमें से एक तो हनुमानजी की मूर्ति है। इसको विनायक इसलिए अपने पास रखता है कि इसकी पूजा करने से उसके बल में वृद्धि होगी। और दूसरी, नीली-पीली रंग की गौ है। विनायक जब कभी मचलता है, तब उसकी माँ इस गाय के खिलौने को उसे देकर कहती है कि यह गाय तेरी सास ने भेजी है अब अगर तू मचलाई करेगा तो यह गाय तेरी सास के पास चली जायेगी। और, तेरा ब्याह नहीं होगा।

(मगर उस डाकू के दिल में मची है उतावली, वह क्यों सुनेगा विनायक की कही जा रही हिदायत? सत्य बात तो यह है कि, चूर्ण की पुड़िया के पास सोनामुखी की पुड़िया भी रखी है। विनायक उस पुड़िया को न उठाने की हिदायत दे रहा था..मगर उतावली वश उस डाकू ने उसकी बात सुनी नहीं और सोनामुखी की पुड़िया खोलकर फटाफट उस सोनामुखी के चूर्ण को खा जाता है। तभी उसका पहला साथी केला खाकर छिलका नीचे गिरा देता है जिसके ऊपर दूसरा साथी अपना पाँव रख देता है। रखते ही डाकू महाशय धड़ाम से गिर पड़ते हैं। उसको चारों खाना चित्त पड़े देखकर, सभी ठहाके लगाकर जोर से हँसते हैं। उन सबको हँसता पाकर, वह अपना अपमान मान बैठता है।)

**सरदार –**

(हँसता हुआ, कहता है) –

अरे धृतराष्ट्र के अवतार, इस तरह कहीं अब मधुमक्खियों के छत्ते में हाथ मत डाल देना। इसलिए कहता हूँ ज़रा सँभलकर चला कर, ज़माना खराब है।

**विनायक –**

(सहारा देने के लिए, अपना हाथ आगे लाता है) –

लीजिये महाराज, हाथ थामिए और उठ जाइए। गिरकर जो इंसान सँभल जाता है, वही सच्चा इंसान होता है।

(एक छोटे बालक का सहारा लेकर, वह डाकू क्यों उठना चाहेगा? जिसने कई लड़ाइयाँ लड़कर जंगजू का ख़िताब जीता है। उसके उठने के बाद, विनायक उनसे कहता है।)

**विनायक –**

फल खट्टे नहीं हैं, मगर जंगल की लोमड़ी के हाथ न आने वाले अंगूर है जो लोमड़ी को खट्टे ही लगते हैं।

(खिलखिलाकर, हँस पड़ता है।)

(उसकी हँसी सुनकर, वह डाकू तिलमिला जाता है, बहुत शर्मिन्दगी महसूस करता हुआ वह अपने साथियों की तरफ़ देखता है। तभी, विनायक सरदार को कहता है।)

**विनायक –**

चलिए महाराज, दालान में। वहाँ चलाकर रसोई बनाइये।

**सरदार –**

(अपने साथियों से कहता है) –

चलो, अब चलें।

**सरदार –**

विनायक। तुम्हारे माता-पिता को धन्य है। निस्संदेह तुम्हारा सा सुशील बालक पाकर वे बड़भागी हुए हैं। वे आवें तब उनसे कहना कि आज तीन डाकू जिन्होंने बड़े-बड़े बहादुरों से हथियार रखवा लिए थे यहाँ लूटने को आये थे पर तुमने उनके साथ ऐसी अच्छी रीति से बर्ताव किया कि उनके सरदार का मन फिर गया और लोगों की हिम्मत लूटने की न पड़ी। भगवान तुम्हारी कुशल करे और तुम्हारी सब तरह से रक्षा करे। अपने तपोधन पूज्य पिताजी से कह देना कि दो दिन बाद फिर तुम्हारे दर्शन करेंगे।

(इतना कहकर, वह अपने साथियों से कहता है।)

**सरदार –**

चलो।

(पहले तो परमानंद को इन बातों को कुछ भी न समझा पर दोहरा के उसको फुसलाते और दिलासा देते जब फिर पूछा तो उसे जान पड़ा कि तीन डाकू यहाँ आज आये थे पर विनायक के भोलेपन और मुलायम बर्ताव के कारण घर को न लूटा।)

**परमानन्द –**

(प्रसन्न होकर, कहता है) –

बेटा। तुमने बहुत अच्छा किया। चाहे अपने जान-पहचान का आदमी हो या अनजान हो जो अपने घर आये वह अतिथि कहलाता है। उसकी जहाँ तक बन पड़े सेवा करना। बेटा, जो अपने साथ बुराई करे उसके साथ भी भला करना। वरन दुर्जन और दुष्ट मनुष्य जिनका स्वाभाव ही दूसरे की बुराई और हानि करने का है उनका मन भी बुराई की ओर से फेर देने

का यही एक उपाय है कि सदा उनके साथ शुद्ध भलाई का बर्ताव करे और उनकी बुराई को अपनी भलाई से दबाकर उन्हें लज्जित कर उनका मन अपने वश में कर ले।

**रशीद भाई –**

अब बाबा का हुक्म मिल गया है, अब चलते हैं। किसी को चलना है साथ में, निःसंकोच चलिए मेरे साथ में।

**ठोक सिंहजी –**

ले जाइये, ज़रूर ले जाइए चाची हमीदा बी को। कब से, आपकी की शान में कशीदा निकाल रही है?

(हमीदा बी का नाम सुनते ही, रशीद भाई घबरा जाते हैं कहीं यह बुढ़िया खूसूट यहाँ आ गयी तो ख़ुदा जाने क्या हाल बना देगी मेरा? यह सोचकर रशीद भाई तपाक से अपने क़दम बढ़ा देते हैं, पाख़ाने की तरफ़। उनके जाने के बाद नूरिया आता है, केबीन में। और पूछता है, रशीद भाई के बारे में।)

**नूरिया –**

कहाँ चले गए, रशीद भाई?

**रशीद भाई –**

अब बाबा का हुक्म मिल गया है, अब चलते हैं। किसी को चलना है साथ में, निःसंकोच चलिए मेरे साथ में।

**ठोक सिंहजी –**

ले जाइये, ज़रूर ले जाइए चाची हमीदा बी को। कब से, आपकी की शान में कशीदा निकाल रही है?

(हमीदा बी का नाम सुनते ही, रशीद भाई घबरा जाते हैं कहीं यह बुढ़िया खूसूट यहाँ आ गयी तो ख़ुदा जाने क्या हाल बना देगी मेरा? यह सोचकर रशीद भाई तपाक से अपने क़दम बढ़ा देते हैं, पाख़ाने की तरफ़। उनके जाने के बाद नूरिया आता है, केबीन में। और पूछता है, रशीद भाई के बारे में।)

**नूरिया –**

कहाँ चले गए, रशीद भाई?

**ठोक सिंहजी –**

(हँसते हुए, कहते हैं) –

भाई नूरिये, अगर तू रशीद भाई के पास जाना चाहता है तो चला जा बाएँ से बाएँ।

**सावंतजी –**

पीर बाबा दुल्हे शाह के हुक्म से आली जनाब बहुत ख़ुशबूदार स्थान पर बैठने गए हैं, अब तू भी वही चला जा ख़ुशबू लेने। साथ में ले जा, चाची को। वह बार-बार याद करती जा रही है, रशीद भाई को।

**नूरिया –**

अम्मी से कह देता हूँ, पहले। वहाँ बैठकर मैं भी नींद ले लूँगा। ठंडी-ठंडी सुंगंधित हवा के झोंके आते रहेंगे, और मैं आराम से नींद लेता रहूँगा।



पाली का स्टेशन आ जाता है, अब सभी यात्री प्लेटफ़ार्म पर उतर आते हैं। सावंतजी, रशीद भाई और ठोक सिंहजी बैग थामे प्लेटफार्म पर उतर आते हैं। तभी उनको

नूरिये की तेज़ आवाज़ सुनाई देती है, वह कह रहा है "आज पकड़ा गया, गुलाबो हिजड़ा।" ये लोग, पीछे घूमकर क्या देखते हैं? वह नूरिया गुलाब सिंह इन्सपेक्टर की पतलून पकड़े खड़ा चिल्लाता हुआ कह रहा है। और साथ में, वह अपनी अम्मीजान को पुकारकर बुला रहा है।)

**नूरिया –**

अरे ओ, अम्मीजान। झट इधर आइये, मैंने गुलाबा हिज़ड़े को पकड़ रखा है। आइये, देखिये। आज गुलाबो हिजड़ा, मर्द कैसे बन गया?

(चारों ओर हँसी का माहौल बन जाता है, हँसी के फव्वारे छूटते हैं। बेचारे गुलाब सिंह का चेहरा अब देखने लायक़ हो जाता है, अब-तक किसी को उसके हिजड़ा बनकर जासूसी काम करने की जो बात मालूम न थी..वह बात अब सबको मालूम हो गयी है। इधर हँसी के ठहाके लगाते हुए सावंतजी, रशीद भाई और ठोक सिंहजी पटरियाँ पार करके दफ़्तर जाते नज़र आ रहे हैं। मंच पर, अँधेरा छा जाता है।)